

घासू की दीवार

सूर्य प्रकाशन मन्दिर

बालू की दीवार

[ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित उपन्यास]

लेखक

श्रीराम शर्मा 'राम'



प्रभात प्रकाशन

दिल्ली * मथुरा

कि इन फूलों की कुछ कितनी मादक है, मन को कैसी बधती है—'वो तुम' सब जैनाबाबी तुम्हारा इस तरह से धाम छोड़ना, यों यकन यों बिरकना यों सबकना क्यों मुझे कभी बेसने को मिसता ।

जैनाबाबी के एवेल मीठी जैसे हाँसों पर मुस्कान बिछर गई। उस कहा—'साहूबाबे, क्या कविता के धीपन में भी कदम बढ़ा रहे हैं। वही क्या कहना चाहते हैं ?

इतना सुनना या कि धीरंगजेब धीर धाने बढ़ा। वह जैनाबाबी घाँसों में घाँसों बाम कर बोसा—'जैनाबाबी मुझे लगता है तेरे धामने में नहीं हैं। तू सब कुछ है। तुने भाज पसमर में मुझे जो कुछ दिखा सि इस करती थी रंगड़ाई ने जो कहकर बाया यह सब मेरे लिए मया है ही, जैनाबाबी यह साहूबाबा धीरंगजेब धाम से तेरा है तेरे ही प्य का प्यासा ।

धीरंगजेब की बात सुनते ही जैनाबाबी के मन में धाया कि वह कं का ठहाका सनाये। उसने सोचा कि अपने मन में धाई हुई बात को कहते पर ऐसा न किया। शायद वह इतना साहस नहीं पुटा सको। फिर उसने कहा—'साहू साहूबाबे ! तुम भी धीरठ का रूप बेसते हो। तुम मानते हो कि धीरठ पराब की तरह मादक इसकी घाँसों धाम के मन को हिला देने वाला इसका जीवन' न साहूबाबे, तुम्हारा य रास्ता नहीं। तुम तो कुराब पड़ते हो। मीसबी से बम-भयर्म की बर्षा कर हो। पुद करना इम्मान के तून में अपनी लसवार रंगना तुम अपने जैनाबा सबसे बढ़ा कर्म मानते हो। तब बोसो ।

धीरंगजेब ने कहा—'तुम ठीक कहती हो। मैंने अभी तक यह समझा। तुम के इस अहान में मैं इसके धमावा धीर कुछ नहीं बेस पाता पर एक तू 'तुम' 'सब जैनाबाबी ! मुझ लगता है, मैरी छापी है भी बरं है मेरे बसने में भी प्यास है धीरठ की प्यास 'असके का प्यास' 'तुम्हें देखकर यही तो मैंने समझा है।

घासमान से ध्राप बरस रही थी। तपन के मारे पत्नी परेखान थे, पेड़ सूखने लगे थे। पर घासमान का रंग देखते-देखते बदसा चारों घोर कामे-काल बादल छामे घोर धरती पर नन्हीं-नन्हीं फुहारें गिरने लगीं। छाहवादा धीरंयजेब अपने महम से निकस कर छाही बाग की घोर चल दिया। सुहाबने मौसम से प्यार करना उसे भी छाता था। वह भी उस रंगीन घोर मस्त कर देने वाली छावन की बहार का आनन्द सेना छाहवा था। बाय में पहुँचते ही उसका आकुल मन खिस उठा। उसने देखा इन्सान की तरह पत्नी भी घासमान से गिरती हुई फुहारों का स्वागत कर रहे थे— कुछ गा रहे थे। कहीं मोर नाच रहे थे घोर कहीं आम क पेड़ पर बैठी हुई कोमल झूक रही थी। प्रजीब मस्त बहार थी। फलों से लदे पेड़ धरती पर झुके जा रहे थे। जुही मौसमिरी बमेसी घोर बम्पा के फूल सुषम्ब लुटा रहे थे। बुसाब के बड़े-बड़े फूल हवा का स्पर्श पाकर ऐसे विकर रहे व मातो उसी दिन सुष का प्रगुभव कर सके थे।

ऐसे सुन्दर, मोहक घोर मनमावने समय में छाहवादा धीरंयजेब अब बाय के एक किनारे पहुँचा, मन में उठती हुई मस्ती के छाब वह मचल उठा। उसने देखा कि दूर पर झुके हुए घाम की डाल के नीचे छाहो महम में रहने वाली उसकी पतिविला हीराबाई, जो बीनाबादी के नाम से भी पुकारी जाती थी घाम को ठोड़ने के लिये जिस धटा से उचक रही थी वह उसके मन को भा गई। हबे पाँव उसके पीछे जाकर बोला—'बीनाबादी !

बीनाबादी नीक लयी, सुर्मिर्द की तरह अपने में ही सिमट गई। पल भर में उसके मुँह से निकला—'छाहवादे तुम ?'

धीरंयजेब घीर घामे बढ़ा बोला 'हाँ बीनाबादी ! घ्राप मेरा भी मन कर छाया कि इस सुहाबने मौसम की बहार से । मैं भी यहाँ जाकर देखूँ'

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन
२०२, बाबूजी बाजार
बिस्वी

लेखक :
श्रीराय शर्मा 'राय'

प्रथम संस्करण
१९६१

मुद्रक
गुसावसिंह यादव
धामरा काहन शर्मा प्रेस
महीरपाड़ा, धारवा

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य :
तीन रुपये

घासमान से घाम बरस रही थी। तपन के मारे पक्षी परेशान थे, पेड़ सुन्नने लगे थे। पर घासमान का रंग देखते-देखते बदला चारों ओर काले-काले बादल छाये और धरती पर नन्हीं-नन्हीं फुहारें गिरने लगीं। घाहूबाबा घोरतजेब अपने महल से निकल कर दाही बाग की ओर चल दिया। सुहाबने मौसम से प्यार करता उसे भी भाठा था। वह भी उस रंगीन और मस्त कर देने वाली छावम की बहार का ध्यान सेना चाहता था। बाग में पहुँचते ही उसका धाकुस मन खिच गया। उसने देखा इन्सान की तरह पक्षी भी घासमान से मिलती हुई फुहारों का स्वागत कर रहे थे— कुछ का रहे थे। कहीं गोर नाच रहे थे और कहीं घाम के पेड़ पर बैठी हुई कोयल झूक रही थी। घाबीब मस्त बहार थी। फलों से सहे पेड़ धरती पर झुके जा रहे थे। लुही मौलसिरी बनेली ओर चम्पा के फूल सुगन्ध फुटा रहे थे। मुसाब के बड़े-बड़े फूल हवा का स्पर्श पाकर ऐंठ निकर रह थे मानो लगी दिव सुख का अनुभव कर लके थे।

ऐसे सुन्दर मोहक और मनभावने समय में घाहूबाबा घोरतजेब जब बाग के एक बिनारे पहुँचा मन में लठठी हुई मस्ती के साथ वह मचल गया। उसने देखा कि दूर पर झुके हुए घाम की टाल के नीचे दाही महल में रहने वाली उसकी परिचितता हीराबाई, जो बीनाबाबी के नाम से भी पुकारी जाती थी घाम को लोड़ने के लिए जिध धदा से लचक रही थी वह उसके मन को भा गई। उसे पाँच लकड़े पीछे बाकर बोला—'बीनाबाबी !

बीनाबाबी खीर गयी हुई हुई की तरह अपने में ही सिमट गई। पक्ष भर में उसके मुँह से निकला—'घाहूबाबा तुम ?

घोरतजेब ओर धामे बढ़ा बोला 'हाँ बीनाबाबी ! घाम मेरा भी मन कर जाता कि इस सुहाबने नीलम की बहार लूँ। मैं भी वहाँ धाकर देखूँ

कि इन फूलों की बुझने कितनी मायक है, मन को कौंधी सगठी है ।
तुम सब, जैनाबाबी तुम्हारा इस तरह से धाम छोड़ना यों मजबूत
यों बिरहना यों बचकना यों मुझ कभी बेचने को मिलता ।

जैनाबाबी के स्वेत मोटी जैस बातों पर मुस्काम बिखर गई ।
कहा—'आह्लादे क्या कविता के धामिन में भी कदम बढ़ा रहे हैं ।
क्या कहना चाहते हैं ?

इतना सुनना था कि धीरंगजेब धीर माने बढ़ा । वह जैनाबाबी
घाँसों में घाँसों काज कर बोला—'जैनाबाबी मुझे लगता है तेरे सामने मैं
नहीं हूँ । तू सब कुछ है । तुने भाव पलभर में मुझे जो कुछ बिखा कि
इस जरा सी घँसकाई ने जो कहर डामा यह सब मेरे लिए नया ।
है, जैनाबाबी, यह आह्लादा धीरंगजेब मान से तेरा है । तेरे ही
का प्यासा ।

धीरंगजेब की बात सुनते ही जैनाबाबी के मन में घाया कि वह
का ठहका सनाब । उसने सोचा कि अपने मन में घाई हुई बात को कहने
पर ऐसा न किया । प्रायः वह इतना साहस नहीं जुटा सकी । फिर
उसने कहा—'मोहो आह्लादे ! तुम भी धीरत का रूप देखते हो । तुम
मानते हो कि धीरत पराब की तरह मायक इसकी घाँसों का
के मन को हिसा देने बासा इसका जीवन न आह्लादे, तुम्हारा
रास्ता नहीं । तुम तो कुरान पड़ते हो । मौनबी से धर्म-धर्म की बर्षा का
हो । मुझ करना इच्छाम के धून में धपनी लजवार रंगना तुम अपने धीर
का सबसे बड़ा कर्म मानते हो । तब बोली ।

धीरंगजेब ने कहा—'तुम ठीक बहरी हो । मैंने अभी तक या
समता । तुम्हारे इस जहान में, मैं इसके असावा धीर कुछ नहीं देख पाता
पर एक तू । तुम सब जैनाबाबी ! मुझे लगता है मेरी छात्री
नीच भी बर्ष है, मेरे बसेजे में भी प्यास है । धीरत की प्यास । इसके
की प्यास । तुम्हें देखकर घड़ी तो मैंने समझा है ।

जैनाबाबी हँस दी मानो हँसना बिरकना घोर ममसभा ही उसका माव बा। कबाचित् वह महीं समझ पा रही थी वह इतनी नादान बन गी थी कि जबान घोरंगजेब ज्यों-ज्यों उसकी उन प्रबाषों को देखता उसकी र बड़ठा जाता। मानो उसने जब तक जो कुछ देखा घोर समझा था, कार बा झूठा था घोरंगजेब के लिए निःस्वार था क्योंकि जयन देखा कि वह अपने मजबूत हाथ में पकड़ी हुई तलवार से भले ही प्रथम पुस्मन का सर काट ल अपने तेज भासे से किसी इस्मान की घानी फाड़ दे परन्तु यह पीरत, यह जैनाबाबी उससे भी अधिक समझ घोर बसवान है। इसके पास जैसे सुवा की सबसे बड़ी ताकत है। यह खूँवार भेड़िये जो भी अपने बघ में करना जानती है। इसके पास रूप है जवानी है। इसके मल म भाव है जीवन में बिरकन है घराब के गधे जैसी मादकता है। सब मही तो घावमी को मरहोय करने की ताकत रखती है। लेकिन मन में इतना साकर भी घोरंगजेब ने अपने होंठ नहीं खोले। वह अपनी सुपित घोर धाकुम घाँवों से घस सुमावनी जैनाबाबी की घोर देखता रहा। कभी-कभी ऊपर पेड़ पर लगे घामों की घोर देखने लगा।

उसी जैनाबाबी ने कहा—'सहजारे तुम सबमुच बहादुर हो साहसी हो। उस दिन साही महल की बेवमें घोर बाँधिया कहती थी कि तुम्हीं इस मुस्क के बादसाह बनोगे। तुम अपनी तसवार से अपना रास्ता साफ कर सकोगे।

घोरंगजेब ने इतनी बात सुनी तो हँसा नहीं, मन्वीर भी नहीं हुमा, अपितु मुस्कराता हुआ बोला—'जैनाबाबी देख तो इस पेड़ के घामों को। जैसे गबरा रहे हैं। किस तरह रस से भरे झुके जा रहे हैं।' उसने घाये कहा—'इस साही बाय में मैं बहुत दिन से नहीं आया। सुवा जाने, घाम किस तरह भा गया। यहाँ घामा तो ।

जैनाबाबी हँस दी—'घाये तो इस जैनाबाबी में ।

'हाँ, जैनाबाबी। तुम ठीक कहने लसी हो। मैंने घाम तुम्हें क्या देखा सबमुच, जिन्दगी का एक जैन, एक मुस मुझे यहाँ धाकर मिस गया।

वह बोला—'तुम कइती हो कि मैं लखवार से घाबमियों के सिंग काटता हूँ। मैं बिसेरो से बइता हूँ। पर बीनाबाबी इसका राज तो सिर्फ इतना है कि मैं इस बिम्बरी को अपनी नहीं मानता। कुशा की देन समझता हूँ। वह ही मेरे इस बिम्ब का मालिक है। उस कुशा की मर्जी के बगैर मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता।

बीनाबाबी बोली—'तुम ठीक कहते हो सइबाबे। उस दिन जब कुली हाथी तुम पर झपटा था तब बाहर ली घोर जठा ही धाही महज में भी झपटा छा गया था। उसी दिन अभी ने तुम्हारी बहादुरी में बार बारें कही थीं। बाबसाह सनायत कहते थे कि मेरा यह बेटा बहादुरी में अपना नाम रोशन करेगा। उसने कहा—'पर सइबाबे तुम्हें भी उस समय सूझा गया कि कुली हाथी को अपनी तरफ बइता हुआ देखकर भी अपना पोका नहीं से नहीं भगाया। बोली क्या उस हाथी से तुम्हें डर नहीं गया था?'

धीरंजयेब सइब मास से मुस्करा दिया। बोला—'पी बीनाबाबी! जानती तो है तु कि मैं एक बाबसाह की घोलाब हूँ। सइना मेरा काम है। सैमिक के धिबिर में बिम्बरी बिठाना मुझे सिखाया गया है। बोल तो ऐसे डरकर क्या मैं अपनी बिम्बरी में कुछ काम कर सकता हूँ। सबमुक्त उस कुली हाथी को बिध कर उसे अपनी घोर बइता हुआ पाकर मैं यह जानने के निब तैयार हो गया था कि बैसे कि मैं बिठना कुजबिल हूँ घोर बिठना बिसेर।

बीनाबाबी ने देखा कि यह कहते-नहते धीरंजयेब के मुह पर तेज दलक घाया था। उसमें जो प्रहस्य सत्साह शौर्य घोर घारम-सम्मान का भाव निहित था वह पस मारते में बापी का सपुष्य होने के छाप बाहर निकल घाया। बीनाबाबी ने देखा कि यही सइबाबा उससे प्रेम की याचना कर रहा था। वह बीनाबाबी के रूप घोर रस में डूब गया था। तब इतना देस बाते ही उस प्रहइइ कमनीय घोर रस भंघी बीनाबाबी के मन में घाया कि वह दो बइब घापे बड़े घोर अपने मधुर होड धीरंजयेब के सन सूँठे होठों पर रस कर कह दे—'मेरे प्राण' मेरे प्यारे' ।

बिम्बु इतना बइ देना घोर कर देना भी बीनाबाबी की सामर्थ्य से

शहर था। क्योंकि वह इस बात को सुन चुकी थी देख भी रही थी कि यहूदारा धीरे-धीरे न सचम पीता था न घाही महल की घोरतों में अधिक उठता-बैठता था। वह अपने सभी भाइयों में निराला था।

तभी यहूदारा ने धामि को संकट हुए कहा 'वह सुनी हाथी वाली फगा मेरे जीवन की महत्वपूर्ण बात की बीनाबादी। उस दिन मैंने सीखा कि दुश्मन से डरना नहीं चाहिये। दुश्मन कितना बलवान है वह समझना चाहिये।

बीनाबादी मुस्करा दी। क्योंकि इतना उसने यहूदारा ही समझ लिया कि वह यहूदारा धीरे-धीरे अपनी धारिक सुनकर स्वयं पबित ही उठा है। अब धामि प्रसन्न बनने लगा है 'सूख'।

किन्तु धीरे-धीरे न फिर कहा 'धामे लड़ने वाले मुझे के लिए वह मेरी एक चुमिका थी। वह एक ऐसा सबक था कि जो मुझे इस जिनगी की पाठ-पाठा में ही पढ़ने की मिस बया। अब उससे मेरा बड़ा नाम हुआ।

इस कर बीनाबादी ने कहा—'धामि सुन गया काटकर पीठ का सबक मेला। वह बोली—'यहूदारे वह तुम्हारा सतर्नाक खेप था। जिनगी की-नाठनाका का ऐसा सबक न उस्ताव को जिनदा रखता है न धामिरे को। धामि धियहमाभार धारिधकोइ धीरे यहूदारा धुका धपना बोड़ा बढ़ाकर उस नूबहार हाथी को धारने में धफन न हीठ तो बया तुम बच सकते थे? न हामिब नहीं तुम्हें तो हाथी के छोड़े से नीचे पटक दिया था।

यह बात सुनकर धीरे-धीरे न ईला न मुस्कराया धामि उसका उत्साह गिर गया। उसमें नागी के जीवन को बचाने का जो एक मात्र पैसा हुआ वह धामि धम-धान मिटने लगा तथ्यापि भीषम धीरे धामिब नुहाबना हा धपना था। धामिरे का कलरव भी बढ़ गया था। किन्तु धीरे-धीरे धामि बीनाबादी नाम की उठ कय की बरी के पास धाकर भी खानी हाथ सोट धामे बामा था। तभी उसने एक गहरी साँस लेकर कहा—'हैं बीनाबादी। तुम ठीक कहती हो। मेरा वह धम सतर्नाक था। जिन लोगों ने मेरी बदब की मैं उनका पहरानपन्ध रहा पर कहा न मैंने धेक ही धामिरे को धम

सुदा को देखना चाहता हूँ। मैं समझना चाहता हूँ कि वह कहाँ है किस किस स्थान में है।

लेकिन जैनाबादी का बसे होना ही काम था। वह हँसते हुए बोली—'भोले बहबारे ! तुम सचमुच ही भजीब हो ! प्यार करने के काबिल हो ! हाँ तुम भेरे'

'जैनाबादी

'बहबारे

तभी धीरंगजेब ने घाम की बात पर बंठी कोयल का स्वर सुना। उसने मुह ऊपर उठाया और कहा—'देख जैनाबादी यह कोयल हमारी पचाह है।

जैनाबादी खिलखिला पड़ी—'किस बात की पचाह है यह कासी कोयल ?

धीरंगजेब का मन मचल उठा। प्रागे बढ़ कर उसने जैनाबादी का हाथ पकड़ लिया और कहा—'यह कासी कोयल अपने स्वर में मिठास रखती है। यह बठाती है हम दोनों को कि हम 'हमारी यह जिवंदगी ।

जैनाबादी का सिर झुक गया और बरबस उसके मुह से निकल पड़ा बहबारे, तुम्हारा यह फँसता ठीक नहीं है। सच में कहाँ और तुम कहाँ।

धीरंगजेब हँसा और इतने जोर से हँसा कि सगा उस शाही बाग का एक-एक पेड़ और एक-एक फूल बरबस ही उस हँसी में सम्मिश्रित हो गया। मानो उस बाग के पेड़ों की तरह जैनाबादी की तरह, स्वयं धीरंगजेब भी मदमस्त होकर अपनी सीमा से दूर चला गया। फलस्वरूप, उसी अवस्था में उसने कहा—'ऐ जैनाबादी देख तुझे सुदा बन्दे ने दूर दिया है यह जबानी बन्दगी है यह प्यासा धीरंगजेब तुमसे भी कुछ पाना चाहता है। जानती तो है ना दम खँमार में सबी एक-दुसरे से कुछ भेटे हैं कुछ दते हैं। सो नू भी- हाँ जैनाबादी।

जैनाबादी की पताके उस समय कुछ बागिन हो सठी थीं। उनके

गासों की सुर्खी घोर भी उमर आई। ऐसा सगा जैसे जीवन का भार उससे
सँभाला नहीं जा रहा है।

तभी धीरंगनेव ने उसकी ठोड़ी ऊपर उठाई। वह उसकी घोर मुका।
जैनाबादी की परम साँसे उसे अपने चेहरे पर महसूस हुई। उसने कुछ कहने
के लिए मुँह खोला ही था कि जैनाबादी के साथ वह भी बौंक गया। उन्होंने
देखा कि बाग में उनके भनावा घोर भी कोई था जो उनके पास से सूखे
पत्तों पर पीर रखता हुआ निकल गया था। फिर उसी बाग में पिसने की
बात कह वह तैजी के साथ वहाँ से चला गया। तभी उसके पीछे खड़ी रह
गयी जैनाबादी ने गहरी साँस ली घोर उसके मुँह से निकला—'भाह
पहचारे।

उस पसह्र बाला का मन अपने काहू में नहीं रह गया था। धीरंगनेव
उसके मन में घाम लगा कर पीट गया था।

२

जैसे ही जैनाबादी ने न देख पाया हो पर धीरंगनेव ने देख लिया
था कि साही बाग में उन दोनों को देखने वाला घोर कोई नहीं स्वयं द्वारा
पिचोह था। धारा भी महसूस था बाग की हवा से निकल आया था।
धीरंगनेव इस बात को अनिर्णीत जानता था कि उसके पिता बाबदाह
बाहदाह का सबसे अधिक स्नेह धारापिचोह पर था। वह ही उसके बाद
बाबदाह बनने वाला था। क्योंकि पारी भाइयों में वही सबसे बड़ा था। पर
धीरंगनेव को यह बात प्रिय नहीं थी जीवन न जाने किस प्रभुस खज में
उसके मन में यह बात उठी कि मुगल साम्राज्य का यदि कोई उत्तराधिकारी
है, तो वह स्वयं है। फलस्वरूप धीरंगनेव अपने हृदय में छिपी हुई इस

महत्वाकांक्षा को बगमते ही मार देने के लिये प्रस्तुत नहीं हुआ। उसने अपनी इस सातसा को दिन-दिन बढ़ावा दिया और पोषक तत्वों से भी बर प्रदान किया।

बाबर, हुमायूँ और अकबर द्वारा प्रतिपादित मुगल साम्राज्य उस समय वैभव के शिखरों को छू रहा था। मुघलों का भारत की अधिकांश भूमि पर अधिपत्य स्थापित हो चुका था लेकिन फिर भी साम्राज्य का प्रथम मुक्त की नींव नहीं सो सकता था। धार्मिक कहीं-कहीं से बनावत धीरे-धीरे की घावाह सुनाई देती थी। फतसवरून कभी स्वयं साहजहाँ को मुक्त भूमि में उतरना पड़ता कभी उनके पुत्रों को। औरंगजेब देखता और अनुभव करता कि बाराह सत्तामत्त बारासिकोह को प्रायः अपने पास रखता और औरंगजेब राजधानी से दूर या तो किसी मुक्त क्षण में होता या दूर भारत में व्यवस्था करने के लिये भेज दिया जाता। इससे धीरे-धीरे औरंगजेब के मन में असन्तोष बढ़ना गया। औरंगजेब यह भी देखता कि बाराह की दृष्टि में बारासिकोह के समझ उसका सम्मान नहीं के बराबर था। स्वाभिमान और मुक्त-मिम औरंगजेब हृदय में जड़ती हुई इस घाव को घात नहीं कर सका। वह जहाँ रहता जहाँ जाता हृदय में नहीं हुई इसी घाकांक्षा से प्रभावित रहता। मानो उसके मानस में ऐसा जहरीला बुझा घुट रहा था जिससे उसका जेजा खिंचा जा रहा था अचरर पाते ही प्राण बाह निकलने के लिये घातुर हो जाता। कदाचित् मही कारण था कि औरंगजेब अपने परिवार के अधिकांश व्यक्तियों से बहुत कम मिला पाता। वह प्रायः एकान्त में रहता। किन्तु उस बाद, जब वह अपने महम में नहीं जान कर सपारी कर रहा था तो अकस्मात् अपनी माता मुमताज बेगम को अपने अपने सामने देखा। उस समय औरंगजेब कपड़ पहन चुका था। कमर के तलवार बांध रहा था। सभी सामने मुस्कराती हुई माता को देख शुरू कर पसाय किया और कहा—'तुम कैसे घायी धम्मीजान !

मुमताज बेगम बैठे के धीरे पास था मई, बहापुर पुन के कन्धे पा हाप रग कर बोनी—'बेग औरंगजेब ! घब कैता हो गया है तू ! बास तो धम्मी से जब से नहीं मिला। किन्तु दिन के तू मेरे पास नहीं आया।

धीरंगजेब कुछ क्षण मौन रहा। माता के समक्ष उसका चिर शुक गया।

किन्तु तभी मुमताज बेगम ने फिर कहा 'मेरे बाबहादुर बेटे ! मुझे तुम पर पत्र है। तुम्हारे धम्मा भी तुम्हारी तारीफ करते हैं।

धीरंगजेब ने चिर उठाया और कहा— धम्मीबान, बाबघाह सत्तामव गारा को प्यार करते हैं मुझे नहीं !

यह सुनते ही मुमताज बेगम का माथा ठनका। उसने घाँसों में भावपूर्ण मर कर धीरंगजेब की धोर देखा और कहा—'ल बेटा ! माँ-बाप क सिए सभी सत्तामों समान होती है। मैंने सभी को गो भास पेट में रखा समान रूप से पाला-पोसा है। सभी के समान तेरे सिये भी मैंने कष्ट उठाया है।

धीरंगजेब का मुँह उस समय कमरे के दरवाजे की धोर था। कमरे के एक कोने से धूपबान से सुगन्ध भरी धूप का धुपल बढ रहा था। कमरा सुगन्ध से सुवासित था। परन्तु पत्र धीरंगजेब ने माँ की बात सुनी तो समा कि वह माँ की बात को सत्य मान कर थी, यह कहने के लिये प्रस्तुत नहीं था कि बाबघाह की निगाह में उसका भी वही सम्मान है जो उसके अन्य भाइयों का। कुछ कहने की इच्छा करके भी वह मौन बना रहा। वह पेट की बात को मुँह पर नहीं ला सका।

मुमताज बेगम ने फिर उसके चिर पर हाम फेरा और कहा—'बेटा प्रत्र में झूठी ही बत्ती है। सपना है पत्र मन्नी है। धीर प्रत्र तो जैसे मैं मौत को धपने सामने देख रही हूँ।

धीरंगजेब की यह सुनकर सटका-जा गया। उसने माँ की धोर देखा और बोला—'धम्मीबान, यह तो सभी के लिये है। तुम्हारे सिये तो मेरे भी सिये।

'मेरे बेटे ! तुम हजार बरस लियो ! धम्नी क्या देखा है तुमने ! क्या भीया है क्या पाया है। तुदा तुम्हारी उन्न दरान करे। मुमताज ने कहा 'देख तो तू कँसा बन गया है। तेरे सभी भाइयों के कमरे सजे रहते हैं पर एक तू है न तुव जानदार बन से रहता है न इस कमरे को सजाते हैं—

है। धरे पयसे ! तू बारखाह का मड़का है। चहवाहा है। रिषाया तेरी घोर देखती है, तेरी घोर मुक़्ती है, समान करती है। तुझे बहादुर मानती है !

घौरंगजेब के घस्तर का बिपाद उसकी बाबी में बुझ गया वह बोसा धम्मी, देखती हो इस संसार में यही सब पाने के लिये घादमी युद्ध करता है, इस्लाम का खून बहाता है।

घरसाह-भाव में मुमताज ने कहा—हां हां यही तो घौरंगजेब।

घौरंगजेब ने कहा—'घोर इसी सबके लिए घादमी अपने भाई घोर स्वबनों को भी मरवा बैठा है। घादमी जिस घासे पर जमना चाहता है, उसे घाफ करना भी पसन्द करता है। वह अपने विरोधियों को देखना नहीं चाहता।'

इतनी बात सुनी तो जैसे फिर मुमताज बेबस का स्वास रुक गया। उसे लगा कि जो रोम उस दर के पुरखों को बा बही इस घौरंगजेब के घरीर घीर मन में ध्याप्य है। क्योंकि मुमताज को इस बात का पता था कि अपने बड़े भाई घुगरू के लिये बा कुछ भी उसके पति घुरंग (घाहजहाँ) ने किया उसे पता ही स्वयं मुमताज बेबस अपने मुह से न कहें, परन्तु जिस बात को बहाना बना चुका उसे भला कैसे छुगया बा छुगता बा। मुमताज बेबस जानती थी कि घुगरू को मरवाने का काम घाहजहाँ का था। किन्तु जब उसने घौरंगजेब की बात सुनी तो उसके छातो पर पूछा गया। उसके मस्तिष्क में घाबी उठी घीर यदि वह घौरंगजेब के कर्म पर ह्याप रख कर खड़ी न होती तो जो सम्भेरा उसकी छातो छाया, घीर मस्तिष्क पर जो प्रतिक्रिया हुई उससे प्रभावित होकर कमरे के पर्त पर गिर पड़ती घीर बेहोश हो जाती।

तभी घौरंगजेब फिर बोसा—'धम्मी यह संसार ही ऐसा है। यहाँ किसी का कोई नाता-रिवाज नहीं। जैसे सभी कुछ ध्यापर है माया है धन है।

इतना सुनते ही मुमताज ने तीछे स्वर में कहा—'नहीं घौरंगजेब।

तू गलत समझता है। तू इस संसार में घाबर बोलता जा रहा है। माया के जाल में फँस रहा है। बोल तो तू निज भाषा में कह रहा है। क्या तू बुद्धा को भूल रहा है।

धीरंगदेव जबान तो था ही कोपी भी था इसलिये जब उसने अपनी माँ से ऐसा फटका पाया कि वह मुर्छा है, गलत रास्ते पर जा रहा है तो तुरन्त ही, अपने मापे में बल डाल कर अपनी बड़ी-बड़ी भाँखों को भाँधी मीच कर माँ की घोर देखता हुआ बोला—'धम्मी यह बात बापसाहूँ समामत से कहतीं तो ठीक था। उन्होंने बिन्दयी का एक बड़ा रास्ता पार किया है। उन्होंने सभी कुछ देखा धीर समझा है। समझती हो न बेटा जो कुछ बोलता है, वह माँ-बाप की बोली में बोलता है। बच्चा पहिले माँ-बाप के सकल में पाठ पढ़ता है।

मुमताज ने कठिनाई से अपने गले का घूँक निगला धीर कहा—
'तो तो ?

'तो क्या धम्मीबन ! मैदान बड़ा है। बिन्दयी का बेस सभी को खेतना है। मैं समझता हूँ कि मुझे दूर तक जाना है। कंटीले रास्ते को साफ करना है।

मुमताज ने फिर अपने स्वर में माधुर्य भरा धीर कठिनाई से भित्तान्त उदय बनकर कहा—'तो तू क्या चाहता है धीरंगदेव।

धीरंगदेव ने कहा—'बुद्धा की नियामत। अपनी प्यारी धम्मीबान का भागीप।

मुमताज अपने अपने मुखे होठों से मुस्करा दी—'धरे वह तो तुझे भिसेया ही मेरे बच्चे। वह ठेरी बीज है। उम पर पैरा हक है। बुद्धा सबसे बड़ा नातिक है। धीर रही मैं धरे यह क्यों मुमता है धीरंगदेव कि तुझे मैंने भी महीने अपने पत्र में रखा था। दड़ी तकलीफ बठा कर तुझे पैरा किया था। बोल तो किगणिय ? इयानिये न कि मैं पैगी माँ कट्टी तू मेरा बेटा ! जब तू मुझे धम्मी कहता है तो जानता है मेरा बसबा बखल-बखल पड़ता है। मेरी धानी कुल जाती है। इसी तरह जब मैं तर धीर भाइयों को

देखती हूँ तो मेरा फिर लुरा की इबादत में झुक जाता है कि जसने मुझे कैसी धाम्यधाम बनाया जिसके घेर घरीबे चार बेटे— चारों ही अपनी सत्संगत के खेरबाह सिपहसालार हैं, घौरंगजेब । तु मेरी धाँख का ठारा है । तू मेरी धातमा का एक ऐसा कोना है कि जिसके हिस्से या टूटने से न मेरी धातमा रहेगी न मैं । मैं तुमसे मिलने के लिये तड़प रही थी । पता है, मोंडियों के हाथों तुझे कई बार बुलवा भी बुली थी । पर तू है कि 'घब धावा घब धावा', कह कर भी अपनी माँ के पास नहीं आया । तभी तो मुझे घाव घावा पड़ा । बटा कूठ सफटा है, पर माँ मत्ता कैसे चुप बैठी रह सक्ती है । वह अपने सभी बेटों की ससामती चाहती है ।

एकाएक फिर कम्बस्ती के मारे घौरंगजेब के मुँह से निकल पड़ा—
 'माँ तुम बापधिकोह को चाहती हो ।

घाह घौरंगजेब । मुमताज बेगम ने घौरंगजेब का कम्पा घीड़ दिया । उसके वीर काँपने लगे । समीप था कि वह गिर पड़ती पर घौरंगजेब ने अपनी माँ को पकड़ लिया घौर परलम पर बैठकर, वह स्वयं नीचे पथ पर बैठठा हुआ बोला—'माँ मैं अपनी गुस्ताखी के लिये धामिया हूँ ।

मुमताज बेगम ने हुबेसी पर टोड़ी रख ली । तभी घौरंगजेब फिर खड़ा हो गया । वह कमरे की खिड़की पर पहुँच गया । वहाँ से यमुना की धारा दिखाई देती थी । बरसात का मौसम होने के कारण यमुना बड़ धारि थी । घौरंगजेब को जहाँ तक दृष्टि पयी, चारों घोर हरियाली थी । कमरे के नीचे ही बाप या जहाँ तरह-तरह के फूल धिस रहे थे । उनकी गुच्छू घौरंगजेब तक धा रही थी । किन्तु उस समय वह धाहवाचा न बाप के फूलों की गुच्छू न पाना न यमुना की अकृती हुई जबानी देख पाया, धपितु वह खिड़की पर लड़ा होकर ही फिर अपनी धम्मीजान उस बड़े राज्य की धतिका मुमताज बेगम की घोर देखकर बोला—'धम्मी मैं यकीन दिलाता हूँ कि बाहवाह ससामत के हर हुनम की बजा लार्डिया । मैं हुनम उजूली नहीं करूँगा ।'

मुमताज बेगम के कहरे पर धावा बिवाद पल भर में बुर हो गया । 'उके प्रातों में फिर बल धाया । छीर में अजना पैदा हुई । अपने मन की

उसी घबस्वा को ले, वह उठ खड़ी हुई और औरंगजेब के पास घाकर बोली—'मेरे अन्धे बेटे ! घाब तू मेरे सामने बैठकर भोजन करना । देख मैंने तेरे लिये वही खाना बनवाया है जो तुझे पसन्द है । बोल तो अब तू कहीं जा रहा है ?

औरंगजेब—'काबीली के पास ।

'ओह ! यही तो मुझ अन्धता भगता है कि तू लुटा की इबादत में मन मयाता है । सचमुच काबीली बहुत अन्धे हैं बहुत काबिल हैं ।

औरंगजेब ने कहा—'अम्मीखान काबीली मुझे सही ढंग से कुटान के धर्म समझाते हैं ।

'पर बेटा तुझे तो इतने बड़े मुस्ल की रहमुमार्द करनी है । कुरान, सूफी, या फकीर क्या इस जिल्दवी की बात करते हैं । धरे, वे तो संसार त्याग की ओर ही इन्सान को ले जाना चाहते हैं ।

माँ की बात सुनकर औरंगजेब मुस्कराया—'हाँ अम्मीखान ! बात यही है । यही ठीक भी है ।

'न न मेरे औरंगजेब ! इस संसार को सूफियों की दरकार नहीं काम करने चाहें की है । देख तो तेरे पुरखों ने कितनी बहोजह्व और कुर्बानी करने के बाद इस देश में धपना पैर बमाया यह सस्तनत हासिस की । सूफी बनकर और जंगलों में बैठकर क्या इस बुनिया का निजाम ठीक तरह से बसामा जा सकता है । बेटा तब तो सभी काहिस कामचोर बुजविस बन जायेंगे । ऐसे आदमी क्या इस संसार का निर्माण कर सकेंगे ! इस बुनिया को चाहिये बहादुर आदमी तूम बस औरंगजेब ।

एकाएक गर्बित और आत्हावित औरंगजेब मुमताज बेगम के परों में मुरु गया—'मेरी अन्धी अम्मी ।'

मुमताज बेगम ने उसका माया भूमते हुए कहा—'मिच प्यार औरंगजेब ! जा बहापुर !'

घायर का छाही दिखा दखने में भसे ही हिन्दुस्तान के बाबघाह । घायरमगाह या कबाचित वह बनठा के सिधे र्पि घीर पतन की भी व हा सफ़टा या परन्तु सबाई यह भी कि वह दिखा स्वत ही घपना विर बु र्हा बा । घाय दिन बही का समाज भयभीत घीर सटकिट बना र्हा बा फमस्बकन उस दिन भी राठ का पहासा प्रहर या । किस की पुरानी सोडि विस्तरों पर जा पड़ी थी । वगम भी घपन-घपने महनों में घायर कर लगी थी । किसे क दूसरे हिस्से में पहारेदार सैनिक घायर के मये में उदपत-बूटे गा-बजा रहे थे । किसे में घायर-द घीर घास्हाह की चारों घे बर्पा ही रही थी । जबान सोडियाँ चारों भरे घायरमान को देख रस- पीत घाने म ठमम थी ।

किन्तु इस र्पि भरे मौसम में स्वय भुयम सभाट घाहजही घाय न सफ़ा । वह घपनी बीमार बगम मुमताज के पास बैठा हुआ या । कई दिन बेवम को बुलार बा । जब उसकी बेचैनी बढ़ी तो उसने बाबघाह को बुलारा घाहजही घायर घीर घफीम के मये में या ।

मुमताज बोली—'जहाँपनाह आज मेरा दिन पबड़ा र्हा है । लपटा है कि मेरी छठी के बीच फोड़ा निकल रहा है घीर अब उसकी पीड़ा बर्षास के बाहर है ।

बेवम फिर बोली— बाबघाह सनामत मुझे दिखता है कि जिस घलोने संसार की हम बानों ने रचना की वह मिट जाने वाला है । मेरा समय अब समीप घा गया है ।

बाबघाह ने यह सुना तो उसका सारा मसा काफूर हो गया । उसका प्रकुम्भ बिहरा घीर उत्साही मन एकाएक ही मुपटा गया । वह कमरे में घूमने लया । उसकी रंगलियाँ डाढ़ी के बासों में हरकत करने लयी ।

उसी समय मुमताज ने घपनी कीज बापी में फिर बह—'मेरे मासिक में देखकर हेराज हूँ कि घर के चिराम से ही घर फुँक जाने वाला

है। आपने घौरंगजेब को दूर के सूने का सूबेदार बकर बना दिया पर उसका हीसबा वहाँ जाकर भी दिन-पर-दिन बढ़ रहा है। देखती हूँ आप मुझसे कुछ नहीं कहते। समूचा सब आपनी छाती क नीचे दबाये बैठ हो। पर मैं भी सुन लेती हूँ कि बर्हीपनाह आपनी घौराव से परैदान है। इसीसिये आबकल आप घराब अधिक पीने सम है। अफ्रीम की मात्रा भी बढ़ा बी है।

छाहजहाँ उस समय छिड़की के पास बड़ा तारा घरे आसमान की ओर देख रहा था। परन्तु उस समय निदरप ही न उसकी आँखें तारे देख रही थी न ताक नमरे में उड़ रही घूप की सुगन्ध पा रही थी। अपितु उसक मन घौर मस्तिष्क को बेगम की बात में झलझला दिया था। सपमुष बादशाह स्वयं जिस बात से परैदान था दुःखी था उसीसे बेगम को प्रभावित बख उसका मन घौर अधिक आकुल हो गया। उसने मुमताज की ओर देखते हुए कहा—'मसकाने मौमजबना आनती हो न बुबा कुछ देता है कुछ नता है। मैं हम आनदार मुस्क का बादशाह मैं इस किसे न आराम से रहने वाला हस्तान बना कभी समझ सका कि जिन्दगी का अन्तोष घौर मुक्त क्या है। शायद वह मैं अपने मसीव में लिखाकर नहीं भाया। उसने बेगम के पंगल क ओर पास आकर कहा—'हमारे पुरखों ने जिस सास घौर दिसेरी के साथ इस बय में आकर आपनी तलवार की बमक दिखाई, यहाँ अपना बबदबा स्थापित किया, वह शायद अब खरम होने वाला है। यह कहते हुए छाहजहाँ ने गहरी साँस ली—'तुमने भी यह सुन लिया बुबा की मर्जी।

मुमताज बोली—'बर्हीपनाह, आप मुझसे कुछ छिपाते हैं। सब आप भी मुझसे दूर रहना चाहते हैं।

छाहजहाँ बोला—'न मेरी मुमताज। तू बीमार है। कमजोर है। मुझे माहूम है कि तेरा दिन मुसायम है। अस्तनत में तो ऐसे लूफान घाटे ही रहते हैं। इस भरती पर तो रोज ही पुठ होते हैं। आबनी रीदा होते हैं, मरते हैं।

बेगम को बादशाह की यह बात पसन्द न आई, बोली—'बर्हीपनाह यहाँ तो भाई ही भाई का बुदमन बन रहा है। अधिकार घौर बेगम की भूख में आनदार लेखना सब जानता है।

की छीनक के पीर उखड़ने लगे । पर अजीब बात यह थी कि उस समय बारगाह ने उस समाचार पर अधिक ध्यान नहीं दिया क्योंकि उसे पता था कि मुमताज की एक लम्बी राखपूठ अधिक बेर तक नहीं टिक सकेंगे । डूब के उबाल के उबूच उलका बोध किसी भी समय समाप्त हो जायेगा । फिर मुमताज की कुछ क्षण में जाने का आदेश दिया गया । एक कासिम बारगाह का बात लेकर श्रीरंगजेब के पास खाना कर दिया गया था । इसलिये दाहजहाँ उठ मोर से निश्चिन्त था ।

मुमताज बेगम की साँसी छठी । बारगाह ने उसकी मोर देखकर कहा—'इस सर्पिल परे बीबन में कुछ धीर नहीं मिलेगा मेरी मुमताज ! इसलिये तुम बेचैन मत बनो । तुम्हारे बेटे बहादुर हैं । बेटे बड़े धीर बूढ़े भी हो जायें तब भी माँ-बाप की दृष्टि में वे बच्चे ही रहते हैं ।'

मुमताज बोली—'मेरे मासिक ! मेरी इच्छा है कि बादायिकोह पही पर बैठे ।

दाहजहाँ ने कहा—'बेगम तुमने मेरे मुँह की बात धीन ली । यही होना बारा बड़ा है अल्लाहवादा है । वह स्लाम धीर बारगाह की हिकायत कर सकता है ।

मुमताज बोली—'पर वह भी कौसी बात है कि लोग श्रीरंगजेब की तारीफ करते हैं । उसे इस्लाम का पुकारी मानते हैं ।'

बारगाह के बहरे पर निवार की रेखा खिच गई, तथा कि उसके मर्न के नाम को किसी ने कुरेद दिया बीला—'बेगम ! श्रीरंगजेब क्या बाहवा है, इसका मुझे पता है । उसके मन में बवानत के संकुर उठ जाये हैं । वह सस्तगत में बरार पैदा करना बाहवा है । दादा की अपह उसके मन में बारगाह बन जाने की इच्छा है । बहरी साँस लेकर मुमताज बोली—'हाँ मेरे मासिक ! मेरे मन में यही काँटा है । श्रीरंगजेब बचपन से ही कुछ बूढ़े निस्म का लड़का रहा है । उसने सारा अकेले में रहना बसकर किया है ।

दाहजहाँ बोला—'श्रीरंगजेब में कुछ काँठ तो बहुत अफ़ी है । अथवा बादलों से अधिक बहादुर है दुइ है संयमी है मजहबी है ।

मुमताज बोली—'बहु अपने भाइयों को देखकर दुःखी है। उनसे दूर रहता है। ऐसा घाबरी अपने मतलब के लिये कुछ भी कर सकता है। वह हमारे दुस्मनों को संख्या बढ़ा रहा है।'

घाबराह ने बाहर की धोर देखाकर लॉडी को घराब लाने का आदेश दिया। एक प्यासा घराब गले के नीचे उतार उसने हुक्के का घूँट मरा और उस लानीरी तम्बाकू का चुर्पा कमरे की छत की धोर छोड़ते हुए कहा—'मुमताज बेबम को घाब जल रहा है रोघनी कर रहा है वह बस बुसेवा ही। इस मुबल सस्तनत का बीर भी क्या देर तक बसेवा।'

मुमताज शस्ता पड़ी—'ओह ! कंठी बात करते हैं मेरे मासिक। बुझापा घा गया है वो क्या सभी कुछ भूल जाना चाहते हैं। याद ली करिये बचपन से अब तक अपने कितने बर्ग किये।'

बाबसाह ने देखा कि राबपूतान से पकड़ कर भाई यई एक सुन्दर और खवान सीडी बेगम के कमरे के बाहर खड़ी थी। वह घासमान में निकलते बाँर की धोर मुँह उठाये थी। उसकी बड़ी-बड़ी घाँसें भली मग रही थीं। बाबसाह उठठा हुआ बोला—'अच्छा बेगम ! तुम घाराब करो। मुझ अपनी तदियत का हाल मेज देना।'

बाबसाह तेजी के साथ बाहर निकला, बाहर खड़ी लॉडी के मोरे घालों पर अपना हाब रखता हुआ बोला—'अच्छी हो बुसेवा !'

बुसेवा ने कोपिस की धोर घिर मुकाकर कहा—'इनामत है, पहांपनाह की।'

सन्ध्या का समय। मुझ-सेब। घोरंगजेब घिबिर में धाराम कर रहा था। उसके मित्री धनुषर ने झुक कर धाराब बजाते हुए कहा—“हुबूर घाही फर्माग नेकर धायरा से भूग घायमा है। हुबम हो तो उसे पेघ किया जाय ?

घोरंगजेब एकान्त चाहता था। दिन भर वह जिस मुझ में सिप्य रहा वह निरुच्य ही पना देने वाला था। उस दिन घोरंगजेब बाल-बाल बचा था। उसका हावी घायल हो गया था। बाघ में घोरंगजेब जिस बोड़े पर बैठा उसे भी मार दिया गया। घबघर की बात कि घोरंगजेब जिस सिपाही भी अपने प्राणों की रक्षा के हेतु इमार-उबर हो गये थे। परन्तु घबम्ब उत्साही घोर घन्त तक मुझ लेन में डटे रहने का सम्प्राप्ती घोरंगजेब न तिन भर ह्म न अपने उत्साह को कम करता दिखाई दिया। इसका फल यह हुआ कि हारा हुआ दीब उसने जीत लिया। उस दिन धनु-बल बुरी तरह परास्त हुआ। घोरंगजेब के सैनिकों ने पाँवों में लूट की जम्हने वही बन का तो नाश किया ही जन का भी किया।

ऐसे समय में हून के घान का समाचार न तो उसे अच्छा लगा घोर न वह उन धर्मों में उससे बात करने के लिए प्रस्तुत हुआ। घोरंगजेब ने कह दिया कि वह मुबह बात करेगा। बाघघाह का पत्र भी अब नहीं पढ़ सकेगा।

कदाचित् घोरंगजेब के मन की उस दुक्क घोर विषम बनी हुई घबबका का कोई घोर कारण हो या नहीं परन्तु यह घबब्य था कि जब वह घिबिर की घोर लोट रहा था तभी एक पाँब के बाहर घून से लपपय इन्सान की लीप उनके कटे हुए मुच्छों घोर उनके घरीर के विविध रंगों के टुकड़ों की देखकर एक घबीब उत्सास के साथ मुस्कराया घोर अपने सैनिकों की घोर देन किबिन् हँस दिया था। किन्तु उसी समय पीछे पर बड़े बड़े घोरंगजेब एक कदम दृश्य की देन घपांत ही रुक गया। वह एकक उसे देखने लगा। उनसे देमा एक ठरणी जिसकी छाती में घोरंगजेब के सिवी सैनिक का माना गया था बरती पर पड़ी थी। उसका मुँह घायलान

की घोर था। निश्चय ही वह सुन्दर तबली कुछ समय पूर्व ही मार डी गई थी क्योंकि उसकी छाती से जो ख़िबर प्रवाहित हो रहा था वह अभी ताजा घोर सास-सास था। यों सभी-दुस्वों का मरना तो श्रीरंगजेब ने अपने जीवन में बहुत देखा था उसकी तसवार ने ही असंख्य व्यक्तियों को मौत के नाट उतार दिया था किन्तु उस क्षण तो श्रीरंगजेब ने यह भी देखा कि उस तबली की सास के पास एक छोटा सा घिघु तड़प रहा था वह माँ-माँ धिस्ता रहा था। नहीं कहा जा सकता कि उस समय श्रीरंगजेब के मन में क्या धार—उस बन्ध को रोता देखकर अपना एक दुस्मन को तड़पत देख हर्ष हुआ। लेकिन श्रीरंगजेब अभी उस करण दुस्मन को देख ही रहा था कुछ निश्चय भी नहीं कर पाया कि अभी उसके संनिकों का ससाव पीछे से आया श्रीर उस माँ-माँ पुकारते हुए बन्धे का रोंदता हुआ आये निकल गया। यह देख श्रीरंगजेब ने इतने जोर से मट्टहास किया जितना थापस उसके पहले उसने कभी नहीं किया होगा।

सिद्धि में पहुँच श्रीर हाथ-मुँह बोककर वह तमाज पड़ने लगा। कुरान की एक भावत का धर्म जब उसने किया अभी उसे उस तबली घोर उसक बन्धे का ध्यान ही आया। कुरान की उस भावत का धर्म था कि इस्लाम सभी इस्लामों पर दया करे। सभी के प्रति सम्मान श्रीर आत्म भाव रखे। इतना पढ़ते ही श्रीरंगजेब ने कुरान बन्द कर दी। बिस्तर पर पड़ते ही उसक मन में आया कि बुजुर्ग श्रीर दया करने वाला इस्लाम मुट नहीं कर सकता। ऐसा भावनी सत्कार में न अपना रास्ता बना सकता है न बस सकता है। कदाचित् इस प्रकार की भावना श्रीरंगजेब बहुत देर पहिले अपने मन में उतार कर रख चुका था। अपने इस विस्वास को वह किसी भी धरा नहीं भूलता था। फलस्वरूप राजपूताने के एक माँब की उस युवा नारी की मूठ देह को देखकर, वह न सहाय्य बना न उस बन्धे को देख उसक मन में ममता श्रीर दया का भाव ही उत्पन्न हुआ।

किन्तु इतना पाकर भी श्रीरंगजेब अपने आप में सन्त नहीं था। यद्यपि दुस्मनों के प्रति वह क्रूर था, लेकिन जो देखनी उस बन्धे के सन्त

उसके मन में जड़ी उससे वह किसी प्रकार भी अपना मुह नहीं खेर सका। वह चाहता था कि उस दुर्लभ जाबला से वह बुर हो जावे।

तभी उसका अनुचर फिर तम्बू के अन्दर आया। चूँकि वह बहुत दिन से पीरिंगजेब के साथ था इसलिए पीरिंगजेब जिस बात पर मुत्सा करता है मतएब अन्दर आते ही उसने पीरिंगजेब के पैरों को बचाने के लिये अपना हाथ रखा और बोला—'हुन्नूर, यह कासिब जो आपरा से आया है, बता रहा है कि वहाँ बापसिकोह मुन्क की बाबसाहत करेगा। बादशाह सत्तामत में अपने बचीरों से यही कहा है।

'पीर पीर क्या कहता था?' पीरिंगजेब न मधीरता से पूछा। 'हुन्नूर मैंने उससे यह भी सुना कि बादशाह सत्तामत आपकी पानरा से बाहर ही रहना चाहते हैं। उन्हें आप बाबसाहत के नूबे आप बकायें पीर बापसिकोह ।

'नुरमहमद !

'हुन्नूर !

जाओ कासिब को पीरल मेरे सामने पैश करो !'

'हुन्नूर, इसी बख ? यह तो वह मफीम का बोल ही हुआ है। कम्बल में घराब भी पूब पी ली है। बहूता था—माज बहुत बसा, पक गया।

पीरिंगजेब ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उतने तुरन्त ही पारोघात्मक स्वर में कहा—'बह अभी आपके पीर बादशाह का लत पैश करे। निदान सेबक लीट बसा। कुछ देर बाद ही अर्ध बेतन कासिब को साथ लाया। पीरिंगजेब ने भारी स्वर में कहा—'क्या है तुम्हारे पास !'

'हुन्नूर, बादशाह सत्तामत का घत !' कहते हुए उसने लत माने बजा दिया। पीटा-आ घत था जिसे पढ़ते ही पीरिंगजेब ने तेज स्वर में कहा—'पीर कुछ ! यह बोला— बादशाह सत्तामत चाहते हैं कि मैं जगम भर लफ

रहू। यों ही सड़ाई के मैदान में बिम्बयी काटता रहू। उसने कासिब को सख्य किया—'बाघी, सुबह मिलना। बाघसाह सखामत को मेरा पत्र देना।

साही दूत सीट गया तो वह दोनों मुद्दियाँ नीप कर तन्हु में धूमठा हुपा बड़बड़ाया—'बारसिकोह सुबा प्रोह, ये सभी धान मेरे हुस्मन बन गये हैं। मुझे पता है कि कम्बस्त द्वारा योगी और सामुर्षों से मिलता है। बर्म की शक्ति का मारा सनाता है। दुष्ट समझता है कि हिलुस्तान के बाघसाह का बड़ा सड़का क्या बना, दुनिया भर का सरताज हो गया। और बाघसाह सनामत तोबा। अस्त मारी गयी है इतने बड़े देश के बाघसाह की। उन्होंने समझा नहीं है कि उनके ही घर में पैदा हुपा यह धीरंगजेब सुबा के रह्य और करम पर मरोसा रखता है। सुबा ने बाहा तो मेरी लसवार के नीचे जो धायेगा वह नहीं बचेना। इस दुनिया में माई, बाप और बेटा माँ और स्त्री सभी अपने स्वार्थ की ओर देखते हैं अपना रास्ता बनाना पसन्द करते हैं 'तो मैं भी' यह धीरंगजेब भी ।

उस समय धीरंगजेब निश्चित रूप से घान्त नहीं था। बाहर सिकों का स्वर गुँब रहा था। वे मठवाले सैनिक धाराव पी-पीकर और गोपत ला लाकर नाच और गा रहे थे। वे कूड-श्रीद रहे थे। उनके स्वर त्रिस तेजी के साथ मैदान में गुँब रहे थे और दूर पह्लाड़ों से टकरा रहे थे उससे उनके पस्साए और उर्मन में अचक्षय ही चार बाँद लग गये थे। मुठ-श्रेत्र के मैदान में कहीं छोड़े हिलहिना रहे थे और कहीं हाथी बिघाड़ रहे थे मानो सैनिकों का वह काफिला जो मीलों का बेरा डाले हुए, धराबभी पर्वत की अपत्यका में अपनी वह सुहावनी रात काट रहा था निश्चय ही गबिठ, धानन्वित और बिजयोरसब के भाव में भरकर अपने-घाप में झुम पड़ा था।

किन्तु उस समय-दल का सरवार, बूँबार और निमय धीरंगजेब रात का एक पहर बीतने पर भी न धाना ला सका और न ही समय दिनों की तरह, अपने लंग्य दल का निरीक्षण करने के लिए बाहर जा सका। धीरंगजेब-सबमुक्त ही निश्चित था। उसे बाघसाह से धायेण मिला था कि वह पत्र कटते

ही बलिष्ठ की तरफ आये। वहाँ कुछ विरोधियों ने मूयस अस्तमत्त का उवाक फेंकने के लिये प्रयत्न आरम्भ किया था। गुजा वहाँ जाकर अपनी पीठ का एक बड़ा भाग कटवा चुका था। अन्तर की बात कि जही पत्र में बाइसाह ने लिखा कि बाघ प्राणरे से दूर नहीं किया जा सकता।

पत्र में उल्लिखित भाव को समझकर, बार-बार घोरंगजेब के मन में आ रहा था कि वह बाइसाह के भाइय को फाड़ दे और उसके टुकड़े घायल भेज दे। परन्तु घोरंगजेब बख्तबाजी में ऐसा कोई कार्य करने के लिए प्रस्तुत नहीं था जिससे अन्त में जही को मुह की खानी पड़े। अतएव जो बात उसके मन में उठ रही थी सबको वह बाहर नहीं निकाल सका। उसने तारी बजायी और सैनिक के घाते पर कहा—'जाता जाओ।'

कुछ ही देर में सामा घा गया। घोरंगजेब अपनी सामा समाप्त करके उठा ही था कि उसने देखा एक साँप नीरे-नीरे उसके तम्बू में प्रवेश कर रहा है। यह देख घोरंगजेब ने जाला उठाया और साँप का मुह माँसे से बाँध दिया। साँप तड़पा और उसने बम तोड़ दिया। उसे तड़पते देख घोरंगजेब ने कहा—'इस साँप की तरह ही मैं अपनी रास्ते में घाये प्रतिद्विन्द्वियों का समाप्त कर दूँगा। मैं बाईं घोर बाघ का मिहान नहीं दूँगा। जिन्दगी के इस मुठ में जब मैं बेगुनाहों को भी मार सकता हूँ तो मेरे अहोम में बाबा बासने वालों को बैर तक इस भरती पर नहीं रहने दूँगा।'

वह तम्बू के बाहर निकला। आसमान में चाँद निकल आया था। रात सुभावनी थी। दिन में जितनी ठंड करपी थी रात में उतनी ही ठण्डक और छरमटा थी। धीनी-धीनी हवा बम रही थी। घोरंगजेब घाते बढ़ गया और सैन्य-दल के निगट जाकर देखने लगा कि सैनिक गध में झूक रहे हैं और ऊँचे स्वर में पा-बजा रहे हैं। यद्यपि घोरंगजेब को स्वतः गाना बजाना पसन्द नहीं था परन्तु इस समय तो वह अपनी मन में दूसरी ही बात लिये था। उसने देखा कि सहर्षी सैनिक जो देखने में इन्सान से गुदा की इबारत करते थे बास-बण्णेशार से क्या ममता और प्यार करने की रीत जानते थे, वे सभी जानी मीठ का टुकड़ा बनकर एक घातकर में दक्ष

ही जीवन बिठा रहे थे। वे कुछ पैसों पर बिक कर उस मैदान में घा पड़े थे। दिन में सूरज की कड़कती धूप की तेजी में इन्हीं धनिकों में से हजारों कट मरे थे और भी छेप थे वे भी मीठ के बकरा बनकर कमी मी मर जाने के लिए अपनी बिन्दगी का गिरवी रख चुके थे।

मन में इतनी बात साकर भी धीरंगजेब सका नहीं। वह कहीं चला नहीं हुआ। उसने अपने साथ कोई धंग रक्षक भी नहीं लिया। वह धकेला ही उस मुगल छिबिर को पार कर घराबसी पर्वत के बिसकुस मीच पहुँच गया। वहीं उसने बरिनी में देखा वह मन्दिर जिसे उसके धनिकों ने लम्बहर बना दिया था। मूर्ति को तोड़ दिया था। लेकिन धीरंगजेब का ध्यान उस मन्दिर की टूटी हुई प्रतिमा की धीर नहीं गया। उसने देखा कि उस मन्दिर में रहने वाले पुजारी का कटा हुआ धरीर अब भी वहीं पड़ा था। वह पुजारी यदि मुसलमान बन जाता तो बच जाता। परन्तु वह तो बिहो था। धीरंगजेब के सामने ही बर्तन और धारुत की बात कर रहा था। उसके इतना कहते ही मन्त्र तुम्हारा भी है तुम्हारी इस बानबठा का भी धीरंगजेब ने उसका मना काटने का धादेश दे दिया था।

धीरंगजेब वहाँ से चस पड़ा। उसे कुछ प्रस्ता नहीं लग रहा था। घबेरा होता तो कदाचित् उस धैर्य मितता। पर बाद के उजियारे में उसने देखा इंसानों की सासों के दर चारो धीर धैसे पड़ थे। सियार धीर कुसे उन सासों के ऊपर डोस रहे थे। कहीं-कहीं खून भी चमक रहा था। छिबिर की घोर सीटते हुए धीरंगजेब ने देखा कि उन हजारों मृतकों में कोई-कोई इतना सुन्दर धीर सजीला बनान था कि वह उस समय भी ऐसा सगता जैसे सो रहा है।

धीरंगजेब तम्बू में प्रविष्ट हुआ तो हठात् बोल पड़ा—'बैनाबादी !'

धीर उत्तर में बैनाबादी मुस्करा बी।

जोवन की बृहत्तर प्राकाशाओं, बिम्बाओं और बुधमनों से फिर धीरंजनेब जीनाबारी को देखते ही सब भूत गया कि कुछ देर पूर्व उसके मनमें क्या था वह बिम्बाओं से पिरा था। किन्तु जीनाबारी ने धीरंजनेब की परेषानी को महामुस किया और कहा—'मेरे मुसवान देखती हूँ तुम परेषान हो। इस रात में जाने कहीं-कहीं भूम फिर कर जाते हो। लगता है कि तुम उस मंदान को पार करके जाते हो जहाँ दिन में इन्सान ने इन्सान का घून किया था उसका पला फाटा था जहाँ खून का बरिया बहा होगा, इन्सान के शरीर का मांस कीचड़ बन कर उस मंदान में पलबन की तरह फैल गया हाया। क्या जाने वहाँ धब भी कितने तड़प रहे होंगे, कितने रहे होंगे बम छोड़ रहे होंगे।

धीरंजनेब मुस्कयया—'तू तो घायरी करने लयी है जीनाबारी।

जीनाबारी ने अपने स्वर पर जोर देकर कहा—'हाँ मेरे मुसवार। तुम्हें देखकर मुझे भी घायरी करना था गया है। सच, मैं भूत जाती हूँ कि मेरे दिल का मासिक दो भागों पर एक साथ सवार होता है। प्यार भी करता है और इन्सान का घून भी। देखते हो तुम्हारे कूठों में कितना घून गया है। मुस लगता है तुम्हारे इन कूठों से कितने इन्सानों क फलेजे कितने दिल कुबसे गये होंगे उनके जरे तुम्हारे दीरों से बिपके होंगे और बिम्बा उठे होंगे।

एकाएक धीरंजनेब ने ठीक स्वर में कहा—'जीनाबारी ।

'मेरे दिलकया मेरे दिल के मासिक। क्या सच तुमने उन घायल दिलों की घाबाज नहीं सुनी। तुम्हें नहीं मान्य हुआ कि उनकी तड़प उनकी टीस धीर कराये' ।

धीरंजनेब ने बाज का प्रत्येक बरता धीर कहा—'पर यह बज जीनाबारी हम सापर में क्या है घायल ? क्यों ? किसलिए ?

जीनाबारी ने कहा—'यह घायल मैं तुम्हें पिसाना चाटती हूँ मेरे

उरता। तुम धराब नहीं पीते न इसीलिये मुझे सक होता है कि तुम जिस तरह इन्सानों का—काफिरों का सिर काटते हो कहीं उसी तरह मुझे भी न मार जासो। मैं अब तुमसे डरती हूँ !

धीरंगजेब ठहाका मार कर बोसा— बाहू बाहू ! तू कितनी डरपोक है, जैनाबादी ।

किन्तु कुछ विदूष सा भाव लेकर जैनाबादी ने कहा— जानते हो, मैं घोरत हूँ प्रेम की सूखी हूँ ।

स्वर को अत्यन्त मधुर बनाकर धीरंगजेब बोसा—'तू न जैनाबादी । तू मेरे दिल की मासिका है । बोल तो मैंने तेरा नील-सा कहुना टाम दिया ।

तुरन्त ही जैनाबादी ने कहा—'हा मेरे मासिक ! इतना मुझे पता है, पर आज मुझे समझ भी सेना है । तुमने धराब न पीने की बिहू की है न तो मैं भी आज बिहू लेकर घाई हूँ कि तुम्हें धराब पिलाऊँगी । कठोर धीरंगजेब इतने पर भी शांत रहा धीर मुसकरा दिया । उसने कहा— तेरा यह पहचान का तरीका मसत है जैनाबादी ।

जैनाबादी ने जैसे अपनी बात पर अड़ कर कहा—'मैं घोरत हूँ प्रेम ही इतनी है मेरी !

धीरंगजेब बोसा—'मैं तू समझदार है । जानती है न कि यह धीरंगजेब तुझे प्यार करता है । तो तू भी इसका दिल परखने पर तुषी है । इसे धराब पिला देना चाहती है जब कि समझती है कि मैं धराब कसबन नहीं पीता । इसे इन्सान के पीने योग्य देय नहीं मानता । इसे पीकर इन्सान अपना होश खो बैठता है ।

जैनाबादी ने कहा—'तो जब तक तुम्हें होश रहेया तुम इस जैनाबादी के नहीं बन सकते इसे अपना दिल नहीं है सकते । क्योंकि तुम्हारा तो काम ही है लड़ना इन्सान का सिर काटना । भसा मुठ को छोड़ तुम्हें धीर क्या सूझता है । सनता है कि इन्सान तुम्हें प्यारा नहीं सगता । उसकी गन्ध तुम्हें नहीं सुहाती । फिर भसा जैनाबादी ही कंचे तुम्हारी बन सकती है । तुम्हारे

दिस में अपने लिए क्या ऐसे बगह बना सकती है ? यह जैनाबादी न करती नहीं ।

धीरंगदेव गम्भीर था । उसका मुँह तम्बू की छत की ओर था । उसकी ओर देखकर बोला—'म जैनाबादी ! यह धारणी बड़ा फिटरती है । यह एक साथ कई काम करता है । प्रेम धीर बुणा प्यार धीर जून करना इसे एक साथ घाता है । लड़ना तो मेरा काम था कर्तव्य था । पर तुमसे यह प्यार करना इम्तान की जिम्मेनी की तरह मेरा भी एक ऐसा स्वभाव है मेरे जीवन की एक ऐसी माँग है कि जिसकी ओर से मैं भी भाँख नहीं फेर सकता । ऐ जैनाबादी जब तू जब मेरे पास जाती है मुझसे वो प्यार की बातें करती है तो मेरे मन में घाता है कि तेरे ऊपर दुनिया की समूची बीसत समूची सप्तगठ कुर्बान करूँ तुझे अपने हृदय के ऐसे कोने में छुपा लूँ जहाँ दुनिया का कोई भी घादमी तुझे न देख सके न पा सके न मुसस घीन सके ।

जैनाबादी हँसी—बाह-बाह ! क्या कुछताने की बात करने लगे, सज्जाने ! मैं जानती हूँ कि धारणी जब धीरठ से अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है तो उस तिर पर जठा मिला है, उस पर कुर्बान हो-होनाना चाहता है । पर जहाँ उसक स्वार्थ का पैठ भरा तो उसी धीरठ को यह धारणी बूझ न पड़ी मक्की की तरह निकाम कर फेंक देता है । या कहते हुए जैनाबादी लहज मान से मुसकराई—'मैं जानती हूँ कि तुम्हें भी गुस्सा बस्ती घाता है । क्या जाने कब तुम इस जैनाबादी का पैठ अपनी फटार से फाड़ दो धीर इस तम्बू से बाहर मैदान में फेंक दो ।

उसी धीरंगदेव ने तेज स्वर में कहा—'तू पापल हो गयी है जैनाबादी, कौरी बातें करती है । मुझे मूर्ख समझत है ।

बिम्बु गुरल्ल ही जैनाबादी ने कहा—'जहाँ मेरे धिरताब । तुम गुर जानते हो हम धीरल की धीरल ही फितनी है । धीर फिर मैं मैं नाबीज लौड़ी ही कमी भी मुम्हारी निपाह से उतर सकती हूँ । घात्र सोने का डेला हूँ तो बस मिट्टी बनाकर भी माँ की ठोकरों में रास्ते के बीच जोराह पर फेंकी जा सकती हूँ ।